एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 03 (मई-जून, 2022)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

खरबूजे की खेती

(*विक्रम)
कीट विज्ञान विभाग, राजस्थान कृषि महाविद्यालय, उदयपुर, राजस्थान
*vikramkumawat305@gmail.com

खरबूजे की खेती प्रायः उच्च तापमान युक्त शुष्क जलवायु में बेहतर होती है। मैदानी क्षेत्रों में उचित जल निकास वाली रेतीली दोमट भूमि सर्वोतम मानी गई है। इसकी सफल खेती के लिए लगभग 25–35 डिग्री सेल्सियस तापमान सर्वोत्तम माना गया है। इसके लिए कम आपेक्षिक आद्रता की जलवायु सबसे उत्तम होती है। खरबूजे की खेती के व्यावहारिक प्रयोगों से यह पाया गया कि फल पकने के समय यदि जमीन में अधिक नमी रहेगी तो फलों की मिठास कम हो जाती है।

भूमि का चयन कैसे करें:– खरबूजे की खेती अत्यधिक रेतीली मिट्टी से लेकर चिकनी दोमट मिट्टियो एवं विशेष रूप से नदियों के किनारे रेतीली भूमि में इसकी खेती की जा सकती है। राजस्थान की रेतीली भूमि में खरबूजे की खेती अच्छी होती है। मैदानी क्षेत्रों में उचित जल निकास वाली रेतीली दोमट वाली भूमि सर्वोत्तम मानी गई है। लगभग 5.8–7.5 पी.एच. वाली भूमि इसके लिए उपयुक्त रहती है। पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करें इसके बाद 2–3 बार कल्टीवेटर या हैरो चलाकर बुवाई करते है।

खरबूजे की किस्में:– पूसा रसराज, पंजाब रसीला, पंजाब सुनरी, दुर्गापुरा मधु, हरा मधु, अर्का राजहंश, अर्का जीत, पूसा सरबती

खेत की तैयारी एवं बुवाई कैसे करें :– सर्वप्रथम खेत में 900–1000 लीटर बायोगैस स्लरी प्रति एकड़ की दर से डालना चाहिए। उसके बाद तीन से चार बार देसी हल से जुताई करके पाटा लगा कर खेत को समतल बना लेते हैं। इसके बाद 10–10 फिट पर नालियां बनाकर उनमें 3–3 फिट के अंतराल पर लगभग 2 फीट गहरे थावले बनाकर प्रत्येक थावले में जैविक खाद तथा 200–250 ग्राम राख मिलाते हैं। उसके बाद नालियों में सिंचाई करते हैं। सिंचाई के 6–8 दिन बाद बीज की बुवाई करते हैं। खरबूजा बीजों को 2 सेंटीमीटर गहरी बुवाई करनी चाहिए तथा प्रत्येक थावले में 6 से 8 बीज बोने चाहिए। उगने पर केवल 4–6 स्वस्थ पौधे रोक लिए जाते हैं। एक हेक्टर खेत के लिए 1–2 किलोग्राम बीज पर्याप्त होता है।

बुवाई का समय:– इसकी बुवाई नवम्बर–मार्च तक की जाती है। जिन क्षेत्रों में पाले का भय नहीं रहता है वहां पर इसकी बुवाई नवम्बर–दिसंबर में की जा सकती है। उत्तरी भारत में पाले का भय रहता है। अतरू इसकी बुवाई फरवरी–मार्च में की जाती है। अगेती खेती की बुवाई नवम्बर–दिसंबर में की जाती है। पर्वतीय क्षेत्र में इसकी बुवाई अप्रैल मध्य से मई तक की जाती है।

सिंचाई एवं निराई–गुडाई कैसे करें :– खरबूजे के पौधे में जब दो से तीन पत्तियां निकल आएं उस समय पहली सिंचाई कर देनी चाहिए। उसके बाद हर सप्ताह सिंचाई करते रहें। फलों के विकसित होने वाले समय में सिंचाई बहुत सावधानी पूर्वक करनी चाहिए क्योकि ज्यादा सिंचाई करने से फलों की मिठास और स्वाद पर विपरीत असर पड़ता है। खरबूजे की लताएं जब खेत में फैलने लगे उससे पहले ही निराई–गुडाई कर खेत को खरपतवार से निजात दिलाना बहुत जरूरी है।

खरपतवार नियंत्रण :–खरबूजे की लताएं फैलने से पूर्व 2–3 बार निराई–गुड़ाई करने से काम चल जाता है साथ ही इनके खरपतवार को उखाड़ कर नष्ट कर देना चाहिए।

कीट नियंत्रण

फल की मक्खी :– यह मक्खी फलों में प्रवेश कर जाती है और वहीं पर अंडे देती है। अण्डों से बाद में सुंडी निकलती है। वह फल को बेकार कर देती है। यह मक्खी विशेष रूप से खरीफ वाली फसलों को हानि पहुंचाती है।

रोकथाम :– इसकी रोकथाम के लिए इस कीट द्वारा प्रभावित फलों को नष्ट कर दें और नीम का काढ़ा या गौ मूत्र को माइक्रो एन्जाइम के साथ मिलाकर अच्छी तरह से मिश्रण तैयार कर 250 मि.ली. मिश्रण को प्रति पम्प में डालकर फसल में तर–बतर कर छिड़काव करें।

सफेद ग्रब :– यह कीट कद्दू वर्गीय पौधों को काफी हानि पहुंचाती है। यह भूमि के अन्दर रहती है और पौधों की जड़ों को खा जाती है, जिसके कारण पौधे सूख जाते है।

रोकथाम :– इसकी रोकथाम के लिए खेत में बीज बोने से पूर्व नीम की खाद का प्रयोग करें।

रोग नियंत्रण

मृदुरोमिल फफूंदी :– यह रोग स्यूडोपरोनोस्पोरा क्यूबेन्सिस नामक फफूंदी के कारण होता है। रोगी पत्तियों की निचली सतह पर कोणाकार धब्बे बन जाते है जो उपर से पीले या लाल भूरे रंग के दिखाई देते है।

रोकथाम :– इसकी रोकथाम के लिए नीम का काढ़ा या गौ मूत्र को माइक्रो एन्जाइम के साथ मिलाकर अच्छी तरह से मिश्रण तैयार कर 250 मि.ली. मिश्रण को प्रति पम्प में डालकर फसल में तर–बतर कर छिड़काव करें।

एन्थ्रेक्नोज :– यह रोग कोलेटोट्राईकम स्पीसीज के कारण होता है। इस रोग के कारण पत्तियों और फलों पर लाल काले धब्बे बन जाते है। ये धब्बे बाद में आपस में मिल जाते है। यह रोग बीज द्वारा फैलता है।

रोकथाम :– खरबूजे के बीज को बोने से पूर्व नीम का तेल या गौमूत्र या कैरोसिन से उपचारित कर बोना चाहिए। उचित फसल चक्र अपनाना चाहिए और खेत को खरपतवार रहित रखना चाहिए।

फलों की तोड़ाई कब और कैसे करें :– खरबूजे की फसल पूरी तरह से पकी है या नहीं आप इन लक्षणों को देखकर समझ सकते हैं। उसके बाद ही फलों की तुड़ाई करना अच्छा होता है। इसका फल सदैव नीचे की ओर से पकना प्रारंभ होता है तथा पकने के साथ फलों का रंग भी बदलने लगता है तथा छिलका मुलायम हो जाता है। फलों के पकने पर फलों से जुड़ी हुई बेलध्तने का रंग हरे से सफेद हो जाता है। पके हुये फलों से एक अलग प्रकार की सुगंध आने लगती है। जिससे यह आभास हो जाता है कि अब फल पक चुका है। फलों को सदैव सुबह के समय ही तोड़ना चाहिए।

उपज :– खरबूजे की खेती प्रति हेक्टेयर 150–200 क्विंटल तक उपज मिल जाती है।